21/10

पाठ्यक्रम की अवधारणा

Concept of curriculum :

शिक्षा एवं मानव का अतीत से ही अटूट सम्बन्ध रहा शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। जो व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन लाती है। यह मुख्य रूप से दो रूपों में विभक्त किया गया है। औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा के रूप में विभक्त हुआ है।

पाठ्य क्रम अर्थ —

पाठ्यक्रम शिक्षा के लक्ष्यों की प्राप्ति में योगदान देता है। पाठ्य क्रम राज्य सरकार द्वारा निर्मित शैक्षिक बोर्डों द्वारा तय किया गया है। प्रत्येक शिक्षक का दायित्व यह है। उस पाठ्य क्रम को विधिवत संचालित करें पाठ्य के अभाव में न तो शिक्षक उचित रूप से शिक्षा दे सकता है और न विद्यार्थी उचित रूप से शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। बालक की शिक्षा का अत्यधिक महत्व है।

पाठ्यक्रम का शाब्दिक अर्थ — पाठ्य क्रम करीकुलम (Curriculum) शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। करीकुलम शब्द लैटिन भाषा से अंग्रेजी में लिया गया है। जिसका अर्थ - " दौड़ का मैदान " अतः शिक्षा के

Notes

जैसे में पाठ्यक्रम वह "दौड़ का मैदान" जिसके अनुसार विद्यार्थी शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने सफल हो सकते हैं।

1- पाठ्यक्रम का संकुचित अर्थ :- परम्परागत अर्थ के अनुसार संकुचित तथा व्यापक का कोर्स है। (Course of Study) सिलेबस (Syllabus) का पर्यायवाची माना गया है। जिसमें कुछ विषयों के तथ्यों तथा सीमाएँ तक निश्चित होती है। संकुचित अर्थ के अनुसार पाठ्यक्रम को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित होता है।

(2) पाठ्यक्रम का व्यापक अर्थ :- वर्तमान पाठ्यक्रम का स्वरूप व्यापक हो गया है। ये केवल अध्ययन के कोर्स व सलेबस से तक सीमित नहीं है। पाठ्यक्रम के अन्तर्गत उन सभी अनुभवों का समावेश होता है। जो बालक के सर्वांगीण विकास कर सके, व्यापक का अर्थ विद्यार्थी के अध्ययनों पाठ्यक्रमों अनुभवों क्रियाकलापों से होता है।

~~कनिंघम~~ के अनुसार :- पाठ्यक्रम कलाकार शिक्षक के हाथ में एक साधन है। जिनमें अपने पदार्थ (विद्यार्थियों) अपने आदर्श उद्देश्य के अनुसार अपनी कला रूप (शिक्षालय) में चित्रित कर सके

के जी० सैयदेन के अनुसार — पाठ्य के समायोजन की प्रक्रिया का मुख्य साधन है। जिसमें बालक दैनिक जीवन के कार्यों में वातावरण के साथ समायोजन करता है। जिनमें बाद में वह अपने क्रियाकलापों को संगठित करता है

Notes

## बेन्ट तथा क्रान बर्ग (Bent and Kronenberg)

"संक्षेप में पाठ्यक्रम पाठ्यवस्तु को सुव्यवस्थित रूप है। जिसका निर्माण बालकों की आवश्यकता की प्राप्ति के लिए होता है।"

क्रो. क्रो के अनुसार पाठ्यक्रम में सीखने वाले या बालक के सभी अनुभव निहित हैं जिसमें जि-हें वह विधालय या उसके बाहर प्राप्त करता है। यह समस्त अनुभव एक कार्यक्रम में निहित किये जाते हैं। जो उनको मानसिक शारीरिक, संवेगात्मक

Notes

## पाठ्य क्रम का स्वरूप या प्रकृति

पाठ्यक्रम का सम्बन्ध शिक्षा से हैं। शिक्षा के विभिन्न धारणाओं के अनुरूप ही पाठ्यक्रम की प्रकृति अथवा स्वरुप का निर्धारण होता हैं।
सामान्यतया पाठ्यक्रम को विद्यार्थी के उन समस्त अनुभवो के रूप में परिभाषित किया जा सकता हैं। जिसका दायित्व विद्यालय अपने ऊपर लेता हैं। इस रूप में पाठ्यक्रम का तात्पर्य प्रायः उन क्रमिक कार्यों से हैं। जो इन अनुभवो से पूर्व इनके होने के साथ- साथ इन अनुभवो के बाद में आयोजित किया जाता हैं।

1- शैक्षिक क्रियाएँ विद्यालयों में शिक्षा के क्षेत्र में जो भी क्रियाएँ आयोजित की जाती हैं। वे शैक्षिक ही होती हैं। क्योंकि इनका नियोजन कुछ निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु निर्धारित पाठ विषयों के पठन- पाठन के दृष्टि से किया जाता हैं। इन क्रियाओं का आयोजन मुख्य रूप से कक्षा कक्षों में विभिन्न विषयों के अध्ययन अध्यापन के रूप में किया जता हैं।

2. पाठ्य -सहगामी क्रियाएँ — पहले पाठ्य का फलस्वरूप विभिन्न विषयों की पाठ्य वस्तुओ के अध्ययन अध्यापन तक सीमित था और विद्यालय में आयोजित होने वाली अन्य गतिविधियां जैसे- ~~खेल कूद~~ खेलकूद व्यायाम, सांस्कृतिक क्रियाकलाप, आदि को माना जाता हैं। यह पाठ्य सहगामी